पुराण की दृष्टि में तीसरा अध्याय

श्रीभगवान् देवि भगवती को तीसरे अध्याय का माहात्म्य वर्णन करते हुए कहते हैं: प्रिये! जनस्थान में एक जड़ नामक ब्राह्मण था, जो कौशिक वंश में उत्पन्न हुआ था। उसने अपना वर्ण धर्म छोड़कर बनिये की वृत्ति में मन लगाया। उसकी रुचि जुआ खेलने, शराब पीने, शिकार खेल कर जीवों की हिंसा करने तथा परायी स्त्रियों के साथ व्यभिचार करने में रहने लगी थी। इन व्यसनों के कारण धन नष्ट होने पर वह व्यापार के लिए बहुत दूर चला गया। कुछ समय उपरान्त जब वह धन कमाकर घर लौट रहा था, रात्रि के अन्धकार में लुटेरों ने उसे पकड़ लिया तथा एक वृक्ष के नीचे उसका धन छीन कर उसके प्राण भी ले लिए। उसके धर्म का लोप हो जाने के कारण मृत्यु उपरान्त वह बड़ा भयानक प्रेत हुआ।

उस जड़ ब्राह्मण का पुत्र बड़ा धर्मात्मा तथा वेदों का विद्वान था। बहुत दिनों तक पिता के लौटने की प्रतीक्षा करने के उपरान्त वह उनका पता लगाने हेतु घर से निकल पड़ा तथा प्रयास करता रहा। तदनन्तर एक दिन उसकी भेंट उसके पिता के सहायक रह चुके व्यक्ति से हो गई जिसने उसे पिता की मृत्यु का सारा हाल बताया। पिता की मृत्यु पर पुत्र को महान शोक हुआ। बाद में वह पिता का पारलौकिक कर्म करने की इच्छा से आवश्यक सामग्री साथ लेकर काशी के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में सात-आठ मुकाम डालकर वह नवें दिन उसी वृक्ष के नीचे पहुँचा, जहाँ उसके पिता मारे गए थे। उस स्थान पर उसने संध्योपासना की और श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय का पाठ किया। उसी समय आकाश में बड़ी भयानक आवाज हुई और उसने अपने पिता को भयंकर आकार में देखा। पुनः उसे सामने आकाश में एक सुन्दर विमान दिखायी दिया, जो महान तेज से व्याप्त था तथा उसके तेज से समस्त दिशाएँ आलोकित हो रही थीं। उसने विमान पर अपने पिता को दिव्य रूप धारण किये विराजमान देखा। उन्हें देखते ही पुत्र ने प्रणाम किया, तब पिता ने भी उसे आशीर्वाद दिया।

तत्पश्चात् उसने पिता से सारा वृतान्त पूछा। उसके उत्तर में पिता ने सब बातें बताकर इस प्रकार कहना आरम्भ किया: **बेटा! दैववश मेरे निकट**

श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय का पाठ करके तुमने इस शरीर के द्वारा किये हुए दुस्त्यज कर्म बन्धन से मुझे छुड़ा दिया। अतः अब घर लौट जाओ क्योंकि जिसके लिए तुम काशी जा रहे थे, वह प्रयोजन इस समय तृतीय अध्याय के पाठ से ही सिद्ध हो गया है। पिता के यों कहने पर पुत्र ने पूछाः **तात! मेरे हित का उपदेश दीजिए तथा और कोई कार्य जो मेरे लिए करने योग्य हो बताइये।** तब पिता ने उससे कहाः अनघ! तुम्हें यही कार्य फिर करना है। मैंने जो कर्म किया है, वही मेरे भाई ने भी किया था। इससे वे घोर नरक में पड़े है। उनका भी तुम्हें उद्धार करना चाहिए तथा मेरे कुल के और भी जितने लोग नरक में पड़े हैं, उन सबका भी तुम्हारे द्वारा उद्धार हो जाना चाहिए। यही मेरा मनोरथ है। बेटा! जिस साधन के द्वारा तुमने मुझे संकट से छुड़ाया है, उसी का अनुष्ठान औरों के लिए भी करना उचित है। उसका अनुष्ठान करके उससे होने वाला पुण्य उन नारकीय जीवों को संकल्प करके दे दो। इससे वे समस्त पूर्वज मेरी ही तरह यातना से मुक्त हो स्वल्पकाल में ही श्रीविष्णु के परमपद को प्राप्त हो जायेंगे।''

इस प्रकार पुत्र को आश्वासन देकर उसके पिता भगवान विष्णु के परमधाम को चले गए। तत्पश्चात् वह भी लौटकर जनस्थान में आया और भगवान् श्रीकृष्ण के मन्दिर में उनके समक्ष बैठकर पिता के आदेशानुसार श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय का पाठ करने लगा। उसने नारकीय जीवों का उद्धार करने की इच्छा से गीतापाठजनित सारा पुण्य संकल्प करके दे दिया। अन्त में वह इन नारकी जीवों का नरक से उद्धार करके स्वयं भी श्रेष्ठ विमान द्वारा श्रीविष्णुधाम को चला गया।